2026 Volume: 02 Issue: 09 www.ijrpa.com ISSN 2456-9995 Research Article

International Journal Research Publication Analysis

Page: 01-11

टिकाऊ विकास के लिए शिक्षण और अभिवृत्ति

(EDUCATION AND ATTITUDE FOR SUSTAINABLE DEVELOPMENT)

Prashant Kumar Singh*[1] and Dr. Amitkumar Mali[2]

[1]Research Scholar, Department of Education, Veer Narmad South Gujarat University, Surat.

[2] Assistant Professor, Department of Education, Veer Narmad South Gujarat University, Surat.

Article Received: 30 July 2026
Article Revised: 20 August 2026
Published on: 10 September 2026

***Corresponding Author: Prashant Kumar Singh**
Research Scholar, Department of Education, Veer Narmad South Gujarat University, Surat.

DOI: https://doi-doi.org/101555/ijrpa.9841

सारांश

टिकाऊ विकास वह विकास हैं जो भविष्य की पीढियो की अपनी जरूरतों को पूरा करने की क्षमता से समझौता किये बिना वर्तमान पीढ़ी की जरूरतों को पूरा करे | सामान्य को प्राप्त करने या प्रदान करने कि प्रक्रिया, तर्क, और निर्णय की शक्तियों का विकास करना तथा परिपक्व जीवन के लिए खुद को या दुसरे को बौद्धिक रूप से तैयार करना ही शिक्षा हैं | टिकाऊ विकास के लिए शिक्षा, प्रत्येक व्यक्ति को एक टिकाऊ भविष्य का आकार देने के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल, अभिवृत्ति और मूल्यों को प्राप्त करने की अनुमति प्रदान करती हैं | शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति के अभिवृत्ति को परिवर्तित किया जा सकता हैं, जिसके कारण किसी भी उत्पादकता में सुधार लाया जा सकता हैं | शिक्षा के द्वारा संस्थागत सुधार, पाठ्यक्रम सुधार, और स्थानीय विशिष्ट संशाधन के विकास को प्राथमिकता दिया जाये तभी टिकाऊ विकास किया जा सकता हैं | टिकाऊ विकास के लिए विभिन्न संसाधनों का उपयोग कैसे किया जाये जैसे मुद्दों को शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति को एक सही दिशा दिया जा सकता हैं | टिकाऊ विकास के लिए सहभागी शिक्षण और सीखने की विधियों की भी आवश्यकता होती हैं, जो विद्यार्थियों के व्यवहार को बदलने के लिए प्रेरित और सशक्त बनाती हैं | यदि टिकाऊ विकास के लक्ष्य को प्राप्त करना हैं तो हमारी वर्त्तमान जीवन शैली से सम्बंधित सभी स्तरों पर शिक्षा के सभी हितधारको के दृष्टिकोण की आवश्यकता होगी | प्रस्तुत लेख में अध्येता ने टिकाऊ विकास के अर्थ, आवश्यकता, टिकाऊ विकास के लिये शिक्षण, अभिवृत्ति एवं इसकी विशेषता, अभिवृति के घटक, एवं इसके द्वारा

किन उद्देश्यों की पूर्ति होती हैं और अभिवृत्ति के कार्य एवं प्रभावित करने वाले कारक, मापनी सरंचना तथा मापनी सरंचना तैयार करते समय किन –किन बातो का ध्यान रखना चाहिए के बारे में चर्चा किया हैं |

चावी रूपी शब्दों : टिकाऊ विकास, शिक्षण, अभिवृत्ति

प्रस्तावना

शिक्षा को एक बड़ी शक्ति के रूप में देखा जाता हैं | शिक्षा एक ऐसी शक्ति हैं जो न केवल राष्ट्र के विकास में बल्कि टिकाऊ विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं | किसी भी कार्य के लिए विशेष ज्ञान या कौशल प्रदान करने या प्राप्त करने की प्रक्रिया ही शिक्षा हैं | टिकाऊ विकास के लिए शिक्षा, आवश्यक ज्ञान कौशल के विकास को बढ़ावा देती हैं | टिकाऊ विकास के लिए शिक्षा, शिक्षको और विद्यार्थियों को अध्ययन- अध्यापन कार्य करने में एक सही दिशा प्रदान करती हैं | शिक्षा वास्तव में एक प्रक्रिया हैं जो व्यक्तिगत क्षमताओं, सामाजिक वातावरण, आर्थिक विकास, आस-पास के नैतिक, और विशेषकर सभी अनुकूलन क्षमता को प्रभावित करती हैं |शिक्षा विद्यार्थियों में किसी विषय के प्रति रूचि, अभियोग्यता, अभिप्राय एवं अभिवृत्ति का टिकाऊ विकास करता हैं | शिक्षा ऐसा होना चाहिए जो लोगो को और छात्रों को शारीरिक और सामाजिक वातावरण के बारे में समझ एवं अभिवृत्ति विकसित करने में सक्षम हो |

शिक्षा व्यक्तियों के जीवन की गुणवत्ता को आकार देने और समाज एवं विश्व को आकार देने की प्रक्रिया हैं| वर्तमान समय में व्यक्ति को न केवल बेहतर मानव और सामाजिक प्राणी बनने के लिए शिक्षित होने की आवश्यकता हैं बल्कि रचनात्मक और उत्पादक प्राणी भी होना चाहिए | इसके लिए सबसे जरुरी हैं अभिवृत्ति, क्योंकि यदि अभिवृत्ति नहीं हैं तो शिक्षण में टिकाऊ विकास नहीं किया जा सकता हैं | नेल्सन मंडेला के अनुसार "शिक्षण ही दुनिया का सबसे शक्तिशाली अधिकार हैं जिसका उपयोग करके आप पूरी दुनिया में बदलाव ला सकते हैं|" निसंदेह हम उसी तरह नहीं चल सकते जैसा कि हम पिछले कई सालो से चलते आ रहे हैं| हमे अपनी जीवन शैली और उपरी तौर पर पूरी दुनिया को टिकाऊ विकास की भविष्य की ओर मोड़ना हैं, जहाँ टिकाऊ विकास की सोच मूलभूत रूप से सामाजिक रूप में सम्मलित हो चुकी है | प्रस्तुत लेख में अध्येता ने टिकाऊ विकास का अर्थ एवं आवश्यकता, टिकाऊ विकास के लिए शिक्षण, अभिवृत्ति का अर्थ, विशेषता, घटक, अभिवृत्ति निर्माण के कारक, अभिवृत्ति के उद्देश्यों की पूर्ति तथा मापनी की सरंचना के बारे में चर्चा किया हैं |

टिकाऊ विकास का अर्थ :

टिकाऊ विकास वह विकास हैं जो वर्त्तमान और भावी पीढ़ी के कल्याण की आवश्यकताओं को पूरा करता हैं | यह विशेष रूप से सरंचनात्मक परिवर्तनों पर ध्यान केन्द्रित करते हुए लंबी अवधि में विकास के साथ संबंधित हैं | जो गुणात्मक रूप से अलग- अलग विशेषताओं या विचार के अंतर्गत, प्रणाली के व्यवहार के परिणाम स्वरूप परिवर्तित होता हैं |

टिकाऊ विकास दो शब्दों टिकाऊ या सतत(Sustainable) और विकास(Development) से मिलकर बना हैं | जिसका अर्थं होता हैं निरंतर एवं अविरल या अनवरत विकास | टिकाऊ विकास को सुस्थिर विकास, धारणीय विकास, पोषणीय एवं संघृत विकास के नाम से भी जाना जाता हैं | वर्ल्ड कमीशन ऑंन एनवायरोमेंट एंड डेवलेपमेंट(1987) के अनुसार "टिकाऊ विकास वह विकास हैं जिसमे वर्तमान पीढ़ी अपनी अवश्यकताओ की पूर्ति, आने वाली पीढ़ी की आवश्यकताओ की पूर्ति को बिना छति पहुचाएं करती हैं |" टिकाऊ विकास प्रकृति के साथ मानव के साहचर्य, उसके प्रति श्रद्धा एवं सम्मान की भावना पर आधारित हैं|

टिकाऊ विकास की आवश्यकता

यादव ए.(2016) के अनुसार टिकाऊ विकास के कुल पांच घटक हैं –ज्ञान, कौशल, अभिवृत्ति, मूल्य और शिक्षण | जिसे टिकाऊ विकास के लिए औपचारिक पाठ्यक्रम में संबोधित किया जाता हैं | शिक्षण और सिखने की गुणवत्ता को बढ़ावा देने में टिकाऊ विकास की आवश्यकता पड़ती हैं | शिक्षा के स्तर को सुधारने की रणनीति को विकसित करना, स्थानीय शिक्षण को सुधारना, सिखने –सिखाने की प्रक्रिया को सुधारने के लिए टिकाऊ विकास की आवश्यकता पड़ती हैं | स्थानीय, राष्ट्रीय और अन्तराष्ट्रीय सहयोग के मूल्य को बढ़ावा देने के लिए टिकाऊ विकास की आवश्यकता पड़ती हैं | विद्यार्थियों को उनके सीखने के अनुभवों की योजना बनाने की भूमिका तैयार करने में टिकाऊ विकास की आवश्यकता पड़ती हैं | मौलिक शिक्षा को बढ़ावा और सुधार, शिक्षा के सभी स्तरों जैसे प्राथमिक, माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा का पुनः स्थापन करने के लिए टिकाऊ विकास की आवश्यकता पड़ती हैं |

टिकाऊ विकास के लिए शिक्षण

टिकाऊ विकास के लिए शिक्षा स्थानीय और वैश्विक दोनों स्तरों पर चुनौतियों का सामना करने के लिए विभिन्न प्रकार की शैक्षिक नीतियों को उपयोग में लाया जाता हैं | शिक्षण के माध्यम से टिकाऊ जीवन शैली पाने के लिए एक विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार की क्षमताओं का ज्ञान होना आवश्यक हैं, जैसे कि तार्किक विचार करने की क्षमता, मानको को समझने की क्षमता, एकीकृत रूप से समस्याओं को

सुलझाने की क्षमता, नीति बनाने की क्षमता, सहयोग बढ़ाने वाली क्षमता तथा आत्म जागरूकता की क्षमता|

UNESCO(2014) के अनुसार "टिकाऊ विकास के लिए शिक्षा प्रत्येक विद्यार्थियों को एक टिकाऊ भविष्य को आकार देने के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल, अभिवृत्ति और मूल्यों को प्राप्त करने की अनुमति देती हैं |" टिकाऊ विकास के लिए शिक्षा का अर्थ हैं शिक्षण और सीखने में प्रमुख टिकाऊ विकास के मुद्दे को शामिल करना जैसे कि जलवायु परिवर्तन, आपदा, जोखिम में कमी, जैव विविधता, गरीबी में कमी और टिकाऊ खपत | इसमें सहभागी शिक्षण और सीखने की विधियों की भी आवश्यकता होती हैं जो विद्यार्थियों को उनके व्यवहार और अभिवृत्ति को बदलने तथा टिकाऊ विकास के लिए कार्यवाही करने के लिए प्रेरित और सशक्त बनाती हैं | टिकाऊ विकास के लिए शिक्षा परिणामस्वरूप महत्वपूर्ण सोच, भविष्य के परिदृश्यों की कल्पना और सहयोगी तरीके से निर्णय लेने जैसी क्षमताओ को बढ़ावा देता हैं |

अभिवृत्ति

टिकाऊ विकास व्यक्ति के जरूरतों को पूरा करता हैं| टिकाऊ विकास भविष्य में आने वाली किसी भी समस्याओ से हमारी रक्षा करती हैं | सनेर (2019) के अनुसार "जीवन की अच्छी गुणवत्ता के लिए टिकाऊ विकास के तीन आयाम होते है- समाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय | इन तीन आयामों के लक्ष्यों को पाने के लिए अभिवृत्ति की आवश्यकता होती हैं| क्योंकि जब तक जीवन की अच्छी गुणवत्ता के लिए एक हकारात्मक अभिवृत्ति नहीं होगा, तब तक टिकाऊ विकास नहीं किया जा सकता हैं|" अच्छी जीवनयापन के लिए शिक्षा की आवश्यकता होती हैं| रावल(2018) में उद्दत राधाकृष्ण के अनुसार "शिक्षा मतलब मानव और समाज का निर्माण" | शिक्षा के द्वारा ही एक सभ्य समाज का निर्माण किया जा सकता हैं | और जब तक समाज के प्रति एवं समाज में उपस्थित संसाधनो के प्रति व्यक्ति का हकारात्मक अभिवृत्ति नहीं होगा तब तक टिकाऊ विकास नहीं किया जा सकता हैं | तथा इसको शिक्षा के माध्यम से ही सम्भव किया जा सकता हैं | यूनाईटेड नेसन्स की असेम्बली में 193 देशों ने मिलकर टिकाऊ विकास के कुल 17 लक्ष्यों को निर्धारित किया | कनापथी व अन्य(2019) ने कहा हैं "कि टिकाऊ विकास के सन्दर्भ में व्यक्ति की अभिवृत्ति बदलने की जरुरत हैं और इन जरूरतों को शिक्षा के माध्यम से हासिल किया जा सकता हैं |" अतः टिकाऊ विकास शिक्षा और अभिवृत्ति के बिना हासिल नहीं किया जा सकता हैं |

अभिवृत्ति का अर्थ

अभिवृत्ति एक ऐसा शब्द हैं जिसका प्रयोग हम – दिन प्रतिदिन की जिंदगी में हमेशा करते हैं| साधारण अर्थ में अभिवृत्ति व्यक्ति के मन की एक विशिष्ट दशा होती हैं| जिसके द्वारा वह सामाज की विभिन्न परिस्थितियों, वस्तुओं, व्यक्तियों, आदि के प्रति अपने विचार या मनोभाव को प्रकट करता हैं| माता – पिता अपनी बेटियों के प्रति एक निश्चित अभिवृत्ति रखते हैं, ऊँची जाति के लोग दलितों के प्रति एक विशिष्ट विचार रखते हैं तथा उसी तरह से विधवा –विवाह तथा बाल –विवाह के प्रति भी लोग एक ख़ास अभिवृत्ति रखते हैं| मानव आर.एन.(2014, पृ.525) के अनुसार "किसी व्यक्ति, वस्तु अथवा विचारधारा के प्रति पूर्वाग्रहों के आधार पर स्वीकारात्मक अथवा अस्वीकारात्मक रूप से अनुक्रिया करने की प्रवृत्ति को अभिवृत्ति कहते हैं|" गुप्ता एवं गुप्ता(2019,पृ. 627) में उद्दत फ्रीमैन के अनुसार "अभिवृत्ति किन्ही परिस्थितयों, व्यक्तियों या वस्तुओं के प्रतिक्रिया करने की स्वाभाविक तत्परता हैं, जिसे सीख लिया गया हैं तथा जो व्यक्ति विशेष के द्वारा प्रतिक्रिया करने का विशिष्ट ढंग बन गया हैं|"

अभिवृत्ति की विशेषता

शुक्ल(2018,पृ. 235) के अनुसार "अभिवृत्ति का विस्तार अमर्यादित होता है, यह अपना पसंद, नापसंद, खोराक, प्रभु, वस्तु, व्यक्ति, स्थान या अनेक बाबतों के संदर्भ में हो सकता है|" अभिवृत्ति बाहय बातों की तरफ या विरोध में होती है। व्यक्ति की व्यवहार अभिवृत्ति के आधार पर निर्धारित किया जा सकता है। अभिवृत्ति के संदर्भ में व्यक्तिगत अंतर होता है। व्यक्ति का अभिवृत्ति गुप्त या खुली हो सकती है। अभिवृत्ति जन्मजात नहीं होता बल्कि इसका उपार्जन किया जा सकता है। कोई भी वस्तु के प्रति, व्यक्ति वस्तु की उपयोगिता के आधार पर तय नहीं होता है। उदाहरण के लिए व्यक्ति की स्वादिष्ट खुराक के प्रति आसक्ति उसके पोषक के कारण पैदा नहीं होता है|" गुप्ता एवं गुप्ता(2019, पृ. 628) के अनुसार "अभिवृत्ति का सम्बन्ध किसी वस्तु,व्यक्ति, परिस्थिति, योजना आदि के प्रति व्यक्ति के व्यवहार से होता हैं| अभिवृत्ति धनात्मक/सकारात्मक अथवा ऋणात्मक/नकारात्मक भी हो सकता हैं| अभिवृत्ति अनुभवों के द्वारा विकसित होती हैं तथा दुसरे नजरिये से देंखे तो अभिवृत्ति की प्रकृति वातावरणजन्य होती हैं| अभिवृत्ति पर्याप्त रूप से स्थायी प्रकृति की होती हैं तथा समय समय पर अभिवृत्ति में परिवर्तन आना संभव होता हैं| अभिवृत्ति के विकास में प्रत्यक्षीकरण तथा सवेंगात्मक कारको की महत्वपूर्ण भूमिका होती हैं| अभिवृत्ति व्यक्तिगत होता जिसको दुसरे शब्दों में व्याख्यायित किया जाये तो मनोवैज्ञानिक वस्तु के प्रति विभिन्न व्यक्तियों की अभिवृत्ति में पर्याप्त अंतर हो सकता हैं| विभिन्न वस्तुओ या व्यक्तिओं के प्रति किसी एक ही व्यक्ति की अभिवृत्ति में पर्याप्त अंतर हो सकता हैं| अभिवृत्ति

सामान्य भी हो सकता तथा विशिष्ट भी हो सकती हैं| अभिवृत्तियां व्यक्ति के व्यवहार को सार्थक रूप से प्रभावित तथा व्यक्ति के व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों से घनिष्ठ सम्बन्ध रखती हैं|"

अभिवृत्ति के घटक

सिंह ए.के.(2015, पृ. 117-119) के अनुसार अभिवृत्ति के घटकों को कुल तीन प्रकार से विभाजित किया गया हैं| संज्ञानात्मक संघटक (cognitive component), भावात्मक संघटक(affective component) तथा व्यवहारात्मक संघटक (behavioural component) | इसको ABC मॉडल भी कहा जाता हैं| यहाँ A से भावात्मक संघटक, B से व्यवहारात्मक संघटक तथा C से संज्ञानात्मक संघटक का बोध होता हैं| सिंह ए. के.(2015, पृ. 118) में उद्दत के अनुसार क्रेच क्रचफिल्ड तथा बैलची तथा मानव आर.एन.(2014, पृ.526)के अनुसार "किसी वस्तु के सम्बन्ध में तीन संघटको का स्थायी तंत्र अभिवृत्ति कहलाता हैं – संज्ञानात्मक संघटक यानी वस्तु के बारे में विश्वास, भावात्मक संघटक यानी वस्तु से सम्बंधित भाव तथा व्यवहारात्मक या क्रिया प्रवृत्ति संघटक यानी उस वस्तु के प्रति क्रिया करने की तत्परता | "

अभिवृत्ति के द्वारा उद्देश्यों की पूर्ति:

अभिवृत्ति स्वयं में व्यवहार नहीं है परंतु वह एक निश्चित प्रकार से व्यवहार या क्रिया करने की प्रवृत्ति को प्रकट करती है। अभिवृत्ति वह पृष्ठभूमि तैयार करती है जो एक व्यक्ति को यह निर्णय करने में सुविधा प्रदान करती है कि नई परिस्थिति में किस प्रकार से कार्य करना है। उदाहरण के लिए जब हम किसी दूसरे से मिलते हैं तब उसके प्रति हमारी अभिवृत्ति उस व्यक्ति से मिलने पर उससे किस प्रकार व्यवहार करना चाहिए इसके लिए अप्रत्यक्ष रूप से एक रूपरेखा या ब्लूप्रिंट तैयार करती है।

अभिवृत्ति –निर्माण को प्रभावित करने वाले कारक :

मानव आर. एन(2014, पृ. 527-528) के अनुसार अभिवृत्ति निर्माण को प्रभावित करने वाले कारको को दो भागों में बाँटा गया हैं – पहला भाग व्यक्ति से सम्बंधित कारको(Factors related to Individual) जिसमे अभिवृत्ति के निर्माण अथवा विकास को प्रभावित करने वाले निम्न व्यक्तिगत कारक महत्वपूर्ण हैं जैसे कि -बालक का शारीरिक तथा क्रियात्मक विकास, बौद्धिक विकास तथा अभिक्षमता, संवेगात्मक विकास, सामाजिक विकास, नैतिक विकास तथा अभिरुचि तथा दूसरा भाग हैं वतावरणीय कारकों (Environmental Factors) जिसमें वातावरण से सम्बंधित निम्न कारक अभिवृत्ति के निर्माण को प्रभावित करते हैं जैसे कि- परिवार का वातावरण, सामाजिक परिवेश, विद्यालय का वातावरण,

सांस्कृतिक परम्पराए, सामाजिक –आर्थिक स्तर, उपलब्ध साहित्य की प्रकृति, मानचित्र तथा टी.वी. प्रसारण की सामग्री, समाचार पत्र प्रचार –प्रसार की सामग्री के अन्य साधन|

अभिवृत्ति के कार्य

सिंह ऐ.के.(2015, पृ. 128-129) के अनुसार अभिवृत्ति के कार्य की भूमिका नीचे निम्नलिखित हैं -

- अभिवृत्ति द्वारा ज्ञान कार्य संपन्न होता हैं –अभिवृत्ति व्यक्ति को सामाजिक अंतक्रियाओं तथा उद्दीपको की व्याख्या करने में तथा अभिवृत्ति संगत सूचना के प्रति तेजी से अनुक्रिया करने मदद करता है|
- अभिवृत्ति द्वारा आत्म- सम्मान का कार्य भी होता हैं – अभिवृत्ति व्यक्ति के आत्म- सम्मान को भी सपोषित करता हैं या उसे मजबूत करता हैं| जब व्यक्ति में किसी विशेष तरह के विश्वास या सिद्धांत के प्रति आस्था से कोई अभिवृत्ति बनती हैं और फिर व्यक्ति उस अभिवृत्ति के प्रति अडिग रहता हैं, तो उससे उसमें एक आत्म-सम्मान का भाव उत्पन्न होता हैं| सच्चाई यह हैं कि व्यक्ति जब व्यक्ति की अभिवृत्ति पर कायम रहता हैं, तो उसमें विभिन्न तरह के संवेग का अनुभव होता हैं| जब व्यक्ति की अभिवृत्ति किसी नैतिक नियम पर आधारित होता हैं और वह वहाँ भी धोखा या छल नहीं करता हैं जहाँ उसे वैसा करने का पर्याप्त अवसर हैं, तो इससे स्वभावतः उसका आत्मसम्मान तथा आत्म-उत्कर्षता अधिक मजबूत हो जाती हैं|
- अभिवृत्ति व्यक्ति की आत्म-अभिव्यक्ति या पहचान के कार्य को सम्पन्न करती हैं – अभिवृत्ति व्यक्ति को उसके महत्वपूर्ण विश्वासों एवं मूल्यों की अभिव्यक्ति करने में मदद करती हैं| दुसरे शब्दों में, अभिवृत्ति व्यक्ति को पहचान या आत्म-अभिव्यक्ति कार्य करने में मदद करता हैं और इस तरह से व्यक्ति यह संचारित करने में सक्षम होता हैं कि वह कौन हैं|
- अभिवृत्ति व्यक्ति के लिए अहं – रक्षात्मक कार्य भी करता हैं – काज का स्पष्ट दवा हैं कि अभिवृत्ति कभी-कभी व्यक्ति के लिए अहं – रक्षात्मक कार्य भी करता हैं| इसका मतलब यह हुआ की व्यक्ति कोई विशेष अभिवृत्ति विकसित करके अपने बारे में प्राप्त अवांछित सूचनाओं से अपने आप को बचाता हैं| जैसे,जो लोग कट्टर धर्मपंथी होते हैं, वे प्रायः ऐसा हाव –भाव तथा अभिवृत्ति दिखलाते हैं मानो वे किसी भी तरह के पूर्वाग्रह तथा विभेद के खिलाफ हैं| इस तरह की अभिवृत्ति बनाकर सचमुच में वे अपने आप को इस तथ्य से पहचानने से बचा लेते हैं कि वे सचमुच में वे विभिन्न सामाजिक समूहों तथा पार्टियों के प्रति अत्यधिक पुर्वग्राहित हैं| इसी तरह व्यक्ति प्रायः यह चाहता हैं कि उसे दूसरों द्वारा स्वीकार किया जाय या सम्मान दिया जाये और ऐसा करने के लिए वह अन्य व्यक्तियों के प्रति उस हद तक एक स्वीकारात्मक एवं धनात्मक अभिवृत्ति दिखलाता हैं जितना कि सचमुच में उसमे रहता नहीं हैं|

- अभिवृत्ति व्यक्ति के लिए छवि अभिप्रेरण कार्य भी संपन्न करता हैं –अभिवृत्ति व्यक्ति के लिए छवि अभिप्रेरण कार्य भी करता हैं| प्रायः व्यक्ति दूसरों की नजर में अपने बारे में एक उत्तम छवि का निर्माण करना चाहता हैं और इसके लिए वह एक सही अभिवृत्ति विकसित करके एक उचित विचार की अभिव्यक्ति करता हैं| शोधो से जो तथ्य सामने आये हैं, वह इस बात की साक्षी हैं कि जिस सीमा तक अभिवृत्ति द्वारा कार्य किया जाता हैं, उससे सामजिक सुचना का संसाधन प्रभावित होता हैं|

अभिवृत्ति मापदंड तैयार करने की प्रविधियां

बेस्ट और खान(1995, पृ. 246), कौल(2022, पृ. 175-179), गुप्ता (2015, पृ.) के अनुसार "अभिवृत्ति कथनों के एक औपचारिक संग्रहण को ही अभिवृत्ति मापनी कहा जाता है| " प्रयोज्य अभिवृत्ति मापनी के कथनों के संदर्भ के संबंध में अपनी प्रतिक्रियाएं व्यक्त करते हैं। उनकी प्रतिक्रियाओं को अंक प्रदान करके आंशिक रूप से परिवर्तित कर लिया जाता है एक ही आवृत्ति की मात्रा को इंगित करते हैं परिमापित विधि को दो भागों में बांटा गया है परिमापित कथन विधि में चयनित कथन विभिन्न मात्रा में अभिवृत्ति को परिलिक्षित करते हैं जबकि प्रतिक्रिया विधि में चयनित कथनों पर व्यक्तियों की प्रतिक्रियाओं की सघनता की मात्रा भिन्न-भिन्न होती है इन दोनों ही प्रकार की विधियों का विभिन्न मनोवैज्ञानिको ने विभिन्न प्रकार से विवेचन और उपयोग करके अभिवृत्ति मापनियों की रचना की है| थर्स्टर्न कि तुलनात्मक निर्णय विधि, थर्स्टर्न व चेव की आभासी अंतराल विधि तथा सफीर की क्रमबद्ध की प्रमुख विधियां हैं| इन विधियों में कथनों को परिमापित करके उनके परिमापन मान (scale value) अर्थात उनके द्वारा परिलिक्षित अभिवृत्ति की मात्रा को ज्ञात करने के लिए विभिन्न प्राविधि का प्रयोग किया जाता है| परिमापित प्रतिक्रिया विधि में लिकर्ट की योग निर्धारण विधि सबसे अधिक प्रचलित हैं| अभिवृत्ति मापनी तैयार करने की मुख्य दो विधियां प्रचलित हैं उचाट (2012, पृ.159-165)के अनुसार 1. थर्स्टर्न की पद्धति 2. लिकर्ट की पद्धति

थर्स्टर्न की पद्धति से अभिवृत्ति माफी तैयार करने के लिए विधानो का संकलन करके उसका एक लिस्ट तैयार किया जाता है फिर विधानों का विद्वानों द्वारा समीक्षा कराया जाता है उसके बाद लगभग 50 से 100 निष्णांतो को पसंद करके फिर प्रत्येक विधान अभिवृत्ति मापनी के अंतर्गत प्रदर्शित करते कितने प्रमाण में विधान की तरफ तटस्थ या विरोध में है उसके लिए अंकन 1 से 11 बिंदुओं पर किया जाता है उसके बाद विधानों की माप मूल्यों की गणना की जाती है जिसमें 1 से 11 क्रमांको के ऊपर से विधानों का मध्यस्थ मूल्य और पादस्थ मूल्य खोजा जाता है इसी मध्यस्थ मूल्य को विधानो का माप मूल्य कहा जाता है हकारात्मक विधान ओं का माप मूल्य 7 से 11 के बीच, नकारात्मक विधानों का माप मूल्य 1 से 5 के बीच और तटस्थ विचारो का मूल्य 6 जितना होना चाहिए| माप मूल्यों की गणना के आधार पर

विधानों को पसंद किया जाता है जिसमें मापनी का अंतिम स्वरूप तैयार होता है जिसमे ऐसे ही विधानो का समावेश होता है जो सबसे सुसंगत ,न्यूनतम संदिग्ध और जो अभिवृत्ति की भिन्न-भिन्न तीव्रताओं को प्रदर्शित करें| इसके बाद विधानो की विश्वसनीयता और वैधता किया जाता है |

लिकर्ट पद्धति में विधानो का संकलन करके विधानो का एक ड्राफ्ट तैयार किया जाता है और फिर ड्राफ्ट को विद्वानो द्वारा समीक्षा कराके आकर उसमें विद्वानों द्वारा निर्देशित विधानों को सुधार कर ड्राफ्ट को प्रतिदर्श (Sample) पर संचालित किया जाता है प्रत्येक विधानो के अनुगमित पांच उत्तर लिखे जाते हैं| जिनमें प्रत्येक विधानों में दिए गए पांच उत्तर में से एक उत्तर पसंद करना होता है| अभिवृत्ति की शक्ति की कोटि बताते हुए यह उत्तर दृढ़ता से सहमत, सहमत, कोई मत नहीं, असहमत या दृढ़ता से असहमत के रूप में होते हैं जिसमें हकारात्मक उत्तर के लिए 5,4,3,2,1 अंक प्रत्येक उत्तर के लिए दिए जाते हैं और नकारात्मक विधानो के उत्तर के लिए 1,2,3,4,5, अंक प्रदान किए जाते हैं उसके बाद विधानों का कलम पृथक्करण किया जाता है, कलम पृथक्करण के लिए आंतरिक सत्यता की जांच जिसमें प्रत्येक विधान के लिए सहसंबंध की गणना किया जाता है और दूसरी विधि में t-मूल्य निकालकर विधानों का कलम प्रथक्करण किया जाता है जिसमें t-मूल्य सार्थक है तो वह विधान योग्य हैं और t-मूल्य सार्थक नहीं है तो विधान योग्य नहीं है फिर उसके बाद विधानों की विश्वसनीयता और वैधता तय किया जाता है, विधानों की विश्वसनीयता और वैधता प्राप्त करने के लिए कलम प्रतिचार सिद्धांत का उपयोग किया जाता हैं|

अभिवृत्ति मापनी तैयार करते समय बहुत सारी सावधानियां रखी जाती हैं| कौल (2022, पृ. 175)के अनुसार अभिवृत्ति मापनी तैयार करते समय जो भी विधान पूछे जाएं वह वर्तमान से हो, विधानों की व्याख्या एक से अधिक नहीं होनी चाहिए अप्रासंगिक विवरणों को नहीं लेना चाहिए, ऐसे भी विधानों को नहीं लेना चाहिए जिसका कोई भी समर्थन ना करें या उस विधान का समर्थन करें, सकारात्मक और नकारात्मक प्रकार के विधानों को रखना चाहिए| ऐसे विधानों को पसंद किया जाए जो पूरे व्यापविश्व पर प्रभावी होता है, विधानों के वाक्य सरल, शुद्ध भाषा, स्पष्ट और कोशिश किया जाए कि वाक्य 20 शब्दों से अधिक न हो और विधानो को पढ़ने पर एक से अधिक विचार नहीं आने चाहिए| विधानों में सर्वव्यापी शब्द जैसे सब, सर्वदा, कोई नहीं, कभी नहीं, मैं, बिल्कुल, तुम केवल जैसे संदिग्धता प्रदर्शित करने वाले विधानों को तथा दोहरे नकारात्मक वाक्य वाले विधानों को नहीं लेना चाहिए|

निष्कर्ष

टिकाऊ विकास हो ऐसा शिक्षण होना चाहिए | अभिवृत्ति के निर्माण के बिना शिक्षण प्राप्त करना संभव नहीं हैं | तथा शिक्षण नहीं हैं तो टिकाऊ विकास नहीं किया जा सकता हैं | टिकाऊ विकास को ध्यान में

रखकर अभिवृत्ति मापनी तैयार किया जाना चाहिए | अभिवृत्ति मापनी का व्यवहार में उपयोग लाया जाना चाहिए | अभिवृत्ति के महत्त्व को स्वीकार किया जाना चाहिए, ताकि टिकाऊ विकास को हासिल कर सके | टिकाऊ विकास तभी संभव है जब विद्यार्थियों के जीवन शैली का विकास अच्छा हो और इसके लिए विद्यार्थियों में विभिन्न क्षमताओ जैसे कि अमलीकरण करने की क्षमता, निर्णय लेने आदि का विकास हो| यह विकास तभी संभव है जब उनको एक बेहतर शिक्षा प्रदान किया जाये | शिक्षा के द्वारा विद्यार्थियों को एक टिकाऊ भविष्य को आकार देने में दिशा मिलती हैं जिससे टिकाऊ विकास किया जा सकता हैं | टिकाऊ विकास के लिए शिक्षा विद्यार्थियों में भविष्य के परिदृश्यो और निर्णय लेनी जैसी क्षमताओ का विकास करती हैं | अभिवृत्ति के द्वारा व्यक्ति किसी कार्य के प्रति अडिग रहता है जिससे टिकाऊ विकास को सफल बनाया जा सकता हैं | शिक्षण के माध्यम के द्वारा अभिवृत्ति व्यक्ति के लिए छवि अभिप्रेरण कार्य भी संपन्न करता हैं | टिकाऊ विकास के द्वारा ही शिक्षण और सिखने की गुणवत्ता में वृद्धि लाया जा सकता हैं |

सन्दर्भ सूची

1. Best W.and Khan J.(1995).Research in education USA: Peretice, hall INCTTLS.
2. Bangay C(2016). Protecting the future: The role of school education in Sustainable development- an Indian case Study Retrived from : https://files.eric.ed.gov/fulltext/EJ1167824 on Date 16 March 2023.
3. Gupta S.P.(2015).Research Introductory.Allhabad:SharadaPustak Bhavan.
4. Joshi S.(2016). Sustainable development. Retrieved from: https://www.researchgate.net/publication/311515460_sustainable_ development_in_Hindi. on date 14/3/2023
5. Kanapathy,s, Lee ,K.E.,Sivpalan,S.and other(2019), Sustainable Development and Chemistry Curriculum: An exploration of foundation students perspective, Intenational journal of sustainability in Higher education, Retrived from : https://doi.org/10.1108/IJSHE-07-2012-0059 on date 18 march 2023
6. UNESCO(2014).Education for Sustainable Development (ESD) retrieved from : https://www.plymouth.ac.uk/students-and-family/sustainability/sustainability-education/esd. on date 14 march2023

7. Saner,R,Yiu,L.,& Kingombe,C.(2019). The 2030 Agenda compared with six related international agreements: valuable resources for SDG implementation. Sustainability Science, Retrieved from: https://doi.org/10.1007/s11625-019-00655-2 on date 18 March 2023.
8. Shukla(2018).Research Methodology and statistics, Ahemdabad :Rishit publication.
9. Rawal N.V.(2018). Philosophical and Sociological Foundations of Education, Ahemdabad: Nirav Prakashan.
10. Yadav A.(2016).Role of education in sustainable development of modern India, Retrieved From: https://www.researchgate.net/publication/339166354 on date 14 march2023
11. Shah G. and Mohapatra S(2021).Role of education for sustainable development. Retrieved from: https://www.researchgate.net/publication/350886560 on date 14 march2023
12. उचाट डी.ये.(2012).शिक्षण और सामाजिक विज्ञान में संशोधन का पद्ध्तिशास्त्र (द्वितीय आवृत्ति). अहमदाबाद: पारस प्रकाशन.
13. कौल एल.(2022). शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली. नोएडा: विकास पब्लिशिंग हॉउस.
14. गुप्ता एस. पी. और गुप्ता ए.(2019). उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान सिद्धांत एवं व्यवहार इलाहबाद : शारदा पुस्तक भवन.
15. देसाई के जी.(2021). मनोवैज्ञानिक मापन.अहमदाबाद :यूनिवर्सिटी ग्रन्थ निर्माण बोर्ड,.
16. मानव आर.एन.(2014). उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, मेरठ : आर.एल. बुक डिपो.
17. सिंह ऐ.के.(2015). समाज मनोविज्ञान की रूप रेखा, वाराणसी: मोती लाल बनारसी दास.